❍ 13 / 07 / 22 की मुरली से चार्ट ❍

⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∫∫ 1 ∫∫ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *किसी के नाम रूप में अटके तो नहीं ?*

➢➢ *साक्षी हो दूसरो के पुरुषार्थ को देखा ?*

➢➢ *स्मृति स्वरुप के वरदान से सदा शक्तिशाली स्थिति का अनुभव किया ?*

➢➢ *गुप्त रूप से पुरुषार्थ किया ?*

────────────────────────

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

〰✧ *वर्तमान समय विश्व की आत्मायें बिल्कुल ही शक्तिहीन, दु:खी अशान्त हैं, वह चिल्ला रही हैं, पुकार रही हैं, कुछ घड़ियों के लिए सुख दे दो, शान्ति दे दो, हिम्मत दे दो,* बाप बच्चा के दु:ख परेशानी देख नहीं सकते, *आप पूज्य आत्माएं भी अपने रहमदिल दाता स्वरूप में स्थित हो, ऐसी आत्माओं को विशेष सकाश दो।*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

―――――――――――――――――――――

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂
✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं विजयी रत्न हूँ"*

〰✧ अपने को विजयी रत्न अनुभव करते हो? विजय प्राप्त करना सहज लगता है या मुश्किल लगता है? मुश्किल है या मुश्किल बना देते हो, क्या कहेंगे? है सहज लेकिन मुश्किल बना देते हो। *जब माया कमजोर बना देती है तो मुश्किल लगता है और बाप का साथ होता है तो सहज होता है। क्योंकि जो मुश्किल चीज होती है वह सदा ही मुश्किल लगनी चाहिए ना। कभी सहज, कभी मुश्किल-क्यों? सदा विजय का नशा स्मृति में रहे। क्योंकि विजय आप सब ब्राह्मण आत्माओंका जन्मसिद्ध अधिकार है।* तो जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त करना मुश्किल होता है या सहज होता है? कितनी बार विजयी बने हो! तो कल्पकल्प की विजयी आत्माओंके लिए फिर से विजयी बनना मुश्किल होता है क्या?

〰✧ अमृतवेले सदा अपने मस्तक में विजय का तिलक अर्थात् स्मृति का तिलक लगाओ। भक्ति-मार्ग में तिलक लगाते हैं ना। भक्ति की निशानी भी तिलक है और सुहाग की निशानी भी तिलक है। राज्य प्राप्त करने की निशानी भी राजतिलक होता है। कभी भी कोई शुभ कार्य में सफलता प्राप्त करने जाते हैं तो जाने के पहले तिलक देते हैं। *तो आपको राज्य प्राप्ति का राज्य-तिलक भी है और सदा श्रेष्ठ कार्य और सफलता है, इसलिए भी सदा तिलक है। सदा बाप

के साथ का सुहाग है, इसलिए भी तिलक है। तो अविनाशी तिलक है।* कभी मिट तो नहीं जाता है?

〰✧ *जब अविनाशी बाप मिला तो अविनाशी बाप द्वारा तिलक भी अविनाशी मिल गया। सुनाया था ना-अभी स्वराज्य का तिलक है और भविष्य में विश्व के राज्य का तिलक है।* स्वराज्य मिला है कि मिलना है? कभी गंवा भी देते हो? सदैव फलक से कहो कि हम कल्प-कल्प के अधिकारी हैं ही!

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

————————————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ जैसे विनाश का बटन दबाने की देरी है, सेकण्ड की बाजी पर बात बनी हुई है, ऐसे *स्थापना के निमित बने हुए बच्चे एक सेकण्ड में तैयार हो जाए ऐसा स्मृति का समर्थ बटन तैयार है?*

〰✧ *जो संकल्प किया और अशरीरी हुए।* संकल्प किया और सर्व के विश्व-कल्याणकारी ऊँची स्टेज पर स्थित हो गए और उसी स्टेज पर स्थित हो साक्षी दृष्टा हो विनाश लीला देख सकें।

〰✧ देह के सर्व आकर्षण अर्थात सम्बन्ध, पदार्थ, संस्कार इन सबकी

आकर्षण से परे, प्रकृति की हलचल की आकर्षण से परे, *फरिश्ता बन ऊपर की स्टेज पर स्थित हो शान्ति और शक्ति की किरणें सर्व आत्माओं के प्रति दे सकें* - ऐसे स्मृति का समर्थ बटन तैयार है? जब दोनों बटन तैयार हो तब समाप्ति हो।

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *बिन्दु बन विस्तार में जाओ तो सार मिलेगा। बिन्दु को भूल विस्तार मे जाते हो तो जंगल में चले जाते हो। जहाँ कोई सार नहीं।* बिन्दु रूप में स्थित रहने वाले सारयुक्त, योगयुक्त, युक्तियुक्त स्वरूप का अनुभव करेंगे। उन्हों की स्मृति, बोल और कर्म सदा समर्थ होंगे। *बिना बिन्दु बनने के विस्तार में जाने वाले सदा क्यों क्या के व्यर्थ बोल और कर्म में समय और शक्तियाँ भी व्यर्थ गँवायेंगे क्योंकि जंगल से निकलना पड़ता है। तो सदा क्या याद रखेंगे? एक ही बात -'बिंदु'।*

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

∬6∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- अशरीरी बनकर, अब घर चलना है"*

➳ _ ➳ इस धरा पर भगवान ने उतरकर अपनी मुलाकातो का खुबसूरत महल मधुबन सजाया... उसी पावन महल की कुटिया में बेठी में आत्मा बाबा की यादो में खोयी हुई... अपने महान भाग्य को मन की आँखों से निहार रही हूँ... *जिसने ईश्वर को मनमीत बनाकर जीवन को सुखो की सेज बना डाला... इन्ही यादो की तन्द्रा मीठे बच्चे की आवाज से टूट गयी... और पलके उठाकर जो निहारा तो... मीठे बाबा सामने है, और बड़े प्यार से मेरी ओर देख रहे है...*

❉ *प्यारे बाबा मुझे ज्ञान रत्नों की बहारो से भरते हुए बोले :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... मात्र यह शरीर नही निराली प्यारी आत्मा हो... अपने खुबसूरत मणि रूप के नशे से भर जाओ... *ईश्वरीय यादो में, देह के आकर्षण से मुक्त होकर... अशरीरी अवस्था को मजबूत बनाओ..*. बार बार इसका अभ्यास करो तो सहज हो जायेगा..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा के ज्ञान वचनो को सुनकर आनन्द से भर गयी और बोली :-* "मीठे प्यारे बाबा मेरे... श्रीमत के साये से कितने जनमो दूर रही... और देह न होकर भी देह के भान से सदा घिरी रही... *अब जो सत्य का सूरज जीवन को प्रकाशित कर रहा है.*.. मै आत्मा हर पल इस सत्य रौशनी में चमक रही हूँ..."

❉ *मीठे बाबा मेरे भाग्य की खूबसूरती में चार चाँद लगाते हुए बोले :-*

"सिकीलधे प्यारे बच्चे... संगम के इस खुबसूरत वरदानी समय को हर पल अपनी आत्मिक उन्नति में लगाओ... जो हो बस उसमे ही रम् जाओ... *झूठे आवरण को त्यागकर, अपने दमकते स्वरूप को प्रतिपल यादो में उभारो.*.. अब घर चलने के समय खुद को कहीं भी न उलझाओ..."

➽➝ _ ➽➝ *मै आत्मा मीठे बाबा को टीचर रूप में देख देख मन्त्रमुग्ध हूँ और कहती हूँ :-* "मेरे मीठे लाडले बाबा... देह के आवरण को सत्य समझ, मै आत्मा कितनी बेसमझ हो गयी थी... *आपने मेरे वजूद को पुनः याद दिलाकर मुझे अनोखी ख़ुशी से सजा दिया है.*.. अब झूठ से मै आत्मा सदा की मुक्त हूँ और सत्य राहो का राही बनकर मुस्करा रही हूँ..."

❉ *प्यारे बाबा श्रीमत पर मेरे अटूट निश्चय को देख कर मुस्करा उठे और समझाते हुए कहने लगे :-* "मीठे प्यारे बच्चे... भाग्य ने जो ईश्वर पिता के हाथो में थमाया है... और खुबसूरत भविष्य सजाया है... तो श्रीमत को दिल से अपनाकर अपने खुबसूरत लक्ष्य की ओर बढ़ो... *अपनी अशरीरी स्थिति को इस कदर द्रढ़ करलो कि कोई भी बात हिला न सके.*..

➽➝ _ ➽➝ *मै आत्मा मीठी मुस्कान से मीठे बाबा को सहमति देते हुए कहती हूँ :-* "ओ सच्चे सच्चे बाबा मेरे... आपने सत्यता भरा हाथ मुझ आत्मा को थमाकर अनोखा जादु कर दिया है... *आत्मिक सुंदरता से सजाकर मुझे बेशकीमती बना दिया है.*.. इस देह के मटमैले पन को आपकी मीठी यादो में सहज ही धो
रही हूँ... ऐसा कह अपने प्यार बाबा को दिल में लिए... मै आत्मा अपने कार्य स्थल में आ गयी..."

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- साक्षी हो दूसरों के पुरुषार्थ को देखते तीव्र पुरुषार्थी बनना है*"

➳ _ ➳ साक्षीदृष्टा बन मास्टर त्रिकालदर्शी की सीट पर सेट हो कर सृष्टि के आदि मध्य अंत को समृति में लाते ही *इस सृष्टि रंग मंच पर मुझ आत्मा द्वारा बजाए गए 84 जन्मों का पार्ट एक-एक करके भिन्न-भिन्न स्वरूपों में मेरे सामने स्पष्ट होने लगता है*। आदि से लेकर अंत तक के अपने पार्ट को अब मैं साक्षी होकर देख रही हूँ।

➳ _ ➳ मेरा अनादि सतोप्रधान स्वरूप बहुत सुंदर, बहुत आकर्षक और बहुत ही प्यारा है। *बीजरूप निराकार परम पिता परमात्मा शिव बाबा की अजर, अमर, अविनाशी सन्तान मै आत्मा अपने अनादि स्वरूप में सम्पूर्ण पावन, सतोप्रधान अवस्था मे हूँ*। एक दिव्य प्रकाशमयी दुनिया जहां हजारों चंद्रमा से भी अधिक उज्ज्वल प्रकाश है उस निराकारी पवित्र प्रकाश की दुनिया की मैं रहने वाली हूँ।

➳ _ ➳ अपने अनादि सम्पूर्ण सतोप्रधान स्वरूप में ही अपनी निराकारी दुनिया को छोड़ सम्पूर्ण सतोप्रधान देवताई चोला धारण कर मैं आत्मा सम्पूर्ण सतोप्रधान देवताई दुनिया मे अवतरित होती हूं। मन बुद्धि से देख रही हूं अब मैं स्वयं को अपने आदि स्वरूप में सतयुगी दुनिया में। *मेरा आदि स्वरूप 16 कला सम्पूर्ण, डबल सिरताज, पालनहार विष्णु के रूप में मन को लुभाने वाला है*।

➳ _ ➳ अपने पूज्य स्वरूप में मैं आत्मा स्वयं को कमल आसन पर विराजमान, शक्तियों से संपन्न अष्ट भुजाधारी दुर्गा के रूप में देख रही हूं। *असंख्य भक्त मेरे सामने भक्ति कर रहे हैं, मेरा गुणगान कर रहे हैं, तपस्या कर रहे हैं, मुझे पुकार रहे हैं, मेरा आवाहन कर रहे हैं*। मैं उनकी सभी शुद्ध मनोकामनाएं पूर्ण कर रही हूं।

➳ ➳ अब मैं देख रही हूँ स्वयं को अपने ब्राह्मण स्वरूप में। ब्राह्मण

स्वरुप में स्थित होते ही अपने सर्वश्रेष्ठ भाग्य की स्मृति में मैं खो जाती हूँ। *संगम युग की सबसे बड़ी प्रालब्ध स्वयं भाग्यविधाता भगवान मेरा हो गया*। विश्व की सर्व आत्माएँ जिसे पाने का प्रयत्न कर रही है उसने स्वयं आ कर मुझे अपना बना लिया। कितनी पदमापदम सौभाग्यशाली हूँ मैं आत्मा जिसे घर बैठे भगवान मिल गए।

➽ _ ➽ यह विचार करते करते अपने सर्वश्रेष्ठ भाग्य के साथ साथ मुझे मेरे ब्राह्मण जीवन के कर्तव्यों का भी अनुभव होने लगता है कि *मेरा यह ब्राह्मण जीवन तो पुरुषार्थी जीवन है। जिसमे मुझे तीव्र पुरुषार्थ कर भविष्य 21 जन्मो की अपनी श्रेष्ठ प्रालब्ध बनानी है*। विश्व की सर्व आत्माओं को परमात्म सन्देश देने की सेवा अर्थ बाबा ने जो मुझे यह ब्राह्मण जीवन दिया है उस कर्तव्य को पूरी निष्ठा और लगन से करने का तीव्र पुरुषार्थ मुझे अवश्य करना है।

➽ _ ➽ अपने आप से दृढ़ प्रतिज्ञा कर अब मैं अपने लाइट के फ़रिशता स्वरूप में स्थित हो पहुंच जाती हूँ सूक्ष्म वतन में बापदादा के पास। अपनी मीठी दृष्टि से असीम स्नेह और सर्व शक्तियाँ मुझमे समाहित करने के साथ साथ *बाबा मुझ से मीठी मीठी रूह रिहान करते हुए कहते हैं, मेरे मीठे बच्चे:- " विश्व की सर्व आत्मायें आपके रूहानी भाई बहन हैं। इसलिए सर्व के प्रति यही शुभभावना रहे कि सबको अपने अविनाशी पिता का परिचय मिल जाये और सभी मुक्ति, जीवनमुक्ति के वर्से की अधिकारी बन जाएं"।*

➽ _ ➽ बाबा की इस मीठी रूह रिहान का जवाब देते हुए मैं बाबा से कहती हूँ, जी बाबा:- "मैं जानती हूं सेवा के मार्ग पर हर घड़ी आप मेरे साथ हो"। बाबा मैं आपको पूर्ण विश्वास दिलाती हूँ कि मैं पूर्णतया योगयुक्त और अंतर्मुखी रह सेवा का पार्ट बजाने का पुरुषार्थ करूँगी। *बाबा आपने मुझे संगठन में रहते "पहले आप" का जो पाठ पक्का करवाया है उसका ख्याल रखते हुए अपने साथी सहयोगियों को आगे रखने का प्रयत्न करूँगी*। साक्षी हो कर दूसरों के पुरुषार्थ को देखते मैं तीव्र पुरुषार्थी बनूँगी।

➺ _ ➺ बाबा से मीठी मीठी रुह रिहान करके, साक्षी स्थिति में स्थित रह सबके पार्ट को साक्षी हो कर देखने का दृढ़ संकल्प ले कर *अब मैं अपने ब्राह्मण स्वरूप में स्थित हो कर नथिंग न्यू की स्मृति से इस बेहद नाटक को हर्षित हो कर देख रही हूं*।

———————————————

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं स्मृति स्वरूप के वरदान द्वारा सदा शक्तिशाली स्थिति का अनुभव करने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं सहज पुरुषार्थी आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा ज्ञान की पराकाष्ठा पर पहुंच जाती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सदैव गुप्त रूप से पुरुषार्थ करती हूँ ।*
✺ *मैं तीव्र पुरुषार्थी आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ *ब्रह्माकुमार-कुमारी बन अगर कोई भी साधारण चलन वा पुरानी चाल चलते हैं तो सिर्फ अकेला अपने को नुकसान नहीं पहुँचाते* - क्योंकि अकेले ब्रह्माकुमार-कुमारी नहीं हो लेकिन ब्राह्मण कुल के भाती हो। स्वयं का नुकसान तो करते ही हैं लेकिन कुल को बदनाम करने का बोझ भी उस आत्मा के ऊपर चढ़ता है। *ब्राह्मण लोक की लाज रखना यह भी हर ब्राह्मण का फर्ज है*। जैसे लौकिक लोकलाज का कितना ध्यान रखते हैं। लौकिक लोकलाज पद्मापद्मपति बनने से भी कहाँ वंचित कर देती है। स्वयं ही अनुभव भी करते हो और कहते भी हो कि चाहते तो बहुत हैं लेकिन लोकलाज को निभाना पड़ता है। ऐसे कहते हो ना? *जो लोकलाज अनेक जन्मों की प्राप्ति से वंचित करने वाली है, वर्तमान हीरे जैसा जन्म कौड़ी समान व्यर्थ बनाने वाली है, यह अच्छी तरह से जानते भी हो फिर भी उस लोकलाज को निभाने में अच्छी तरह ध्यान देते हो*, समय देते हो, एनर्जी लगाते हो। तो क्या इस ब्राह्मण लोकलाज की कोई विशेषता नहीं है!

➳ _ ➳ उस लोक की लाज के पीछे अपना धर्म अर्थात् धारणायें और श्रेष्ठ कर्म याद का, दोनों ही धर्म और कर्म छोड़ देते हो। कभी वृत्ति के परहेज की धारणा अर्थात् धर्म को छोड़ देते हों, कभी शुद्ध दृष्टि के धर्म को छोड़ देते हो। कभी शुद्ध अन्न के धर्म को छोड़ देते हो। फिर *अपने आपको श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए बातें बहुत बनाते हो। क्या कहते - कि करना ही पड़ता है*! थोड़ी सी कमज़ोरी सदा के लिए धर्म और कर्म को छुड़ा देती है। जो धर्म और कर्म को छोड़ देता है उसको लौकिक कुल में भी क्या समझा जाता है? जानते हो ना? *यह किसी साधारण कुल का धर्म और कर्म नहीं है। ब्राह्मण कुल ऊँचे ते ऊँची चोटी वाला कुल है*। तो किस लोक वा किस कुल की लाज रखनी है?

✺ *"ड्रिल :- लौकिक लोकलाज के लिए ब्राह्मण कुल की लोकलाज को नहीं

छोड़ना।"*

➳ _ ➳ *देह रूपी थाली में पूजा के पावन दीपक की भाति, मैं आत्मा अपने प्रकाश से आसपास के अज्ञान अंधकार को दूर कर रही हूँ*... मेरी पावनता का प्रकाश आत्माओं की बुझती ज्योति में नवीन ऊर्जा का संचार कर रहा है... *अंधकार से लडना और जीतना मेरे कुल की मर्यादा है और इस पर मुझे पूरा नाज़ है...*

➳ _ ➳ फरिश्ता रूप धारण कर मैं आत्मा, बापदादा के साथ सूक्ष्म लोक में, बापदादा के ठीक सामने... बापदादा के हाथो में फूलों की दो मालाएँ... एक में सुन्दर गुलाब और एक में अक के फूल गुँथे हुए है... साफ अन्तर नजर आ रहा है दोनों में *एक का कुल साधारण है और एक का श्रेष्ठ*... एक खुशबू से रहित है दूसरा खुशबूदार है, कोमल है... मैं हाथ बढाकर गुलाब के फूलों की माला स्वीकार करता हूँ... बापदादा मेरी समझ पर मुस्कुरा रहे हैं...

➳ _ ➳ बापदादा के हाथों में हाथ लिए मैं आत्मा, द्वापर की यात्रा पर... सामने देख रही हूँ भव्य विशाल मन्दिर, मन्दिर के बाहर भक्तों की लम्बी कतार, मगर मन्दिर का दरवाजा बन्द है, क्योंकि दर्शनीय मूरत आत्माएं अभी श्रृंगार में ही लगी है... *कभी लौकिक लोकलाज का श्रृंगार तो कभी देवताई श्रृंगार...* मानो समय की महत्ता और संगम युगी जन्म का महत्व भूल गयी है... लम्बे इन्तजार के बाद भक्तों की निराश होकर लौटती भीड... एक बैचेनी सी पैदा कर रही है मेरे मन में... उनके चेहरों की निराशा देखकर मैं देख रहा हूँ बापदादा की ओर... *और बापदादा मेरी पीडा को देखकर आज मुस्कुरा रहे है... मानो आज मुझे मेरे धर्म व धारणाओं का आईना दिखा रहे है...*

➳ _ ➳ मुझे याद आ रहा है कब कब *मुझ आत्मा की ब्रहमाकुमार, ब्रहमाकुमारी बनकर साधारण चाल चलन रही* और कब कब मैने लौकिक कुल की लोक लाज निभाने के लिए ब्राहमण कुल की मर्यादाओं से समझौता किया... और *इस हीरे तुल्य जन्म को कौडियों के समान समझा...*

➳ _ ➳ ब्राहमण कुल की लोकलाज के प्रति अटट श्रदधा का भाव मन में

लिए मैं आत्मा बापदादा के साथ एक नौका पर सवार हूँ... *मेरे हाथों में लौकिक मर्यादाओं की पोटली है... मैं आत्मा देखते ही देखते फेंक देती हूँ इसे नदी की तेज धाराओं में... और देख रही हूँ अपने से आहिस्ता आहिस्ता दूर जाती हुई... इतनी दूर कि वो पोटली आँखों से पूरी तरह ओझल हो गयी है...*

➽ _ ➽ मुक्ति का तीव्र एहसास... और बापदादा गले से लगा रहे है मुझे... मेरा बापदादा से हाथों में हाथ लेकर वादा- *"अब कोई भक्त मेरे मन्दिर से निराश नही लौटेगा बाबा"... मैं बस ब्राह्मण कुल की मर्यादाओं को ही जीवन में धारण करूँगी...* अब ये दर्शनीय मूरत श्रृंगार करने में ज्यादा समय नही लगायेगी... गहरे निश्चय और दृढता के साथ मैं फरिश्ता वापस अपने उसी देह रूपी थाली में... इस बार मुझ दीपक की लौ गहरे आत्मविश्वास के साथ जगमगा रही है... ओम शान्ति...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔